सीआईएस

सत्रीय कार्य

जनवरी 2019

एवं

जुलाई 2019 सत्र

हेतु

रेशम कीट पालन में प्रमाणपत्र कार्यक्रम (सीआईएस)

(केंद्रीय रेशम बोर्ड, वस्त्र मंत्रालय (भारत सरकार) के सहयोग से विकसित)

कृषि विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
नई दिल्ली–110068
2019

कृषि विद्यापीठ

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

मैदान गढ़ी, नई दिल्ली–110068

सत्रीय कार्य जमा कराने की अंतिम तिथि

पाठ्यक्रम कोड	अध्ययन केन्द्र में सत्रीय कार्य जमा कराने की अंतिम तिथि	
	जनवरी 2019 सत्र	जुलाई 2019 सत्र
बीएलपी 001	15 फरवरी 2019	16 अगस्त 2019
बीएलपीआई 002	28 फरवरी 2019	31 अगस्त 2019
बीएलपीआई 003	15 मार्च 2019	15 सितम्बर 2019
बीएलपी 004	28 मार्च 2019	27 सितम्बर 2019

नोटः

- कृपया, अपना सत्रीय कार्य उपरोक्त तिथि के अनुसार अपने अध्ययन केन्द्र/पीएससी में जमा कराए।
- परीक्षा फार्म जमा कराने से पहले (मार्च और सितम्बर में क्रमशः जून और दिसम्बर सत्रांत परीक्षा हेतु), अनिवार्य है कि आप जिन पाठ्यक्रमों की परीक्षा दे, उनसे संबंधित सत्रीय कार्य जमा करायें और कार्यक्रम प्रभारी या अध्ययन केंन्द्र/पीएससी के संयोजक से प्रमाणीकरण करायें।

प्रिय िक्षार्थी,

''रेशम कीट पालन में प्रमाणपत्र (सीआईएस) कार्यक्रम'' में आपका स्वागत है।

आशा है कि आपने सीपीएफ कार्यक्रम मार्गदर्शिका को अच्छे से पढ़ लिया होगा। सत्रांत परीक्षा (टीईई) की अधिभारिता - 80% और सतत् मूल्यांकन (सत्रीय कार्य) की 20% होगी। सैद्धांतिक घटक के साथ प्रत्येक पाठ्यक्रम के लिए एक सत्रीय कार्य है अर्थात् कार्यक्रम में सम्मिलित पाठ्यक्रमों (बीएलपी 001, बीएलपीआई 002, बीएलपीआई 003 और बीएलपी 004) के लिए 4 सत्रीय कार्य हैं। प्रत्येक सत्रीय कार्य 50 अंकों का है जो कि अंततः, सैद्धांतिक घटक की 20% अधिभारिता में परिवर्तित होगा। शिक्षार्थियों को सलाह दी जाती है कि आप सर्वप्रथम अध्ययन सामग्रियों का अध्ययन करें और तत्पश्चात् निर्देशों को ध्यान में रख कर सत्रीय कार्य प्रतिक्रिया तैयार करें। आपकी प्रतिक्रियाएं स्व–अध्ययन उद्देश्यों के लिए प्रदत्त पाठ्यपुस्तक सामग्री/खंडों की ज्यों की त्यों नकल नहीं होनी चाहिए। अपनी सत्रीय कार्य प्रतिक्रियाएं निर्धारित तारीख या इससे पहले तक अपने अध्ययन केंद्र/कार्यक्रम अध्ययन केंद्र (पीएससी) में जमा करा दें। सत्रीय कार्यों का मूल्यांकन अध्ययन केंद्र/पीएससी के परामर्शदाताओं द्वारा किया जायेगा और प्राप्त अंकों की अधिभारिता सत्रांत परीक्षा में प्राप्त अंकों के प्रतिशत में जोड़ दी जायेगी। सत्रांत परीक्षा में बैठने के लिए प्रत्येक शिक्षार्थी को सत्रीय कार्य पूरा करना होगा। इसलिए अपने सत्रीय कार्यों को सजगता से लें और समय पर जमा करायें।

सामान्य निर्देश

1. यदि आप किसी सामान्य निर्देश सत्र की देय तारीख से पहले सत्रीय कार्य जमा नहीं करा पाते तो आपको आगामी सत्रों के सत्रीय कार्य के नये सेट को पूरा करना होगा।
2. अपनी उत्तर पृश्ठिका के पहले पृश्ठ के सबसे ऊपर दाये कोने में अपनी नामांकन संख्या, नाम, पूरा पता और प्रेशण की तारीख लिखें।
3. अपनी उत्तर पृश्ठिका के पहले पृश्ठ के बायें कोने में कार्यक्रम, शीर्शक, पाठ्यक्रम शीर्शक, सत्रीय कार्य कोड, अध्ययन केंद्र कोड के स्थान का उल्लेख करें।

प्रत्येक सत्रीय कार्य के लिए आपकी उत्तर पृश्ठिका के पहले पृश्ठ के सबसे ऊपर का भाग इस तरह होना चाहिएः

पाठ्यक्रम शीर्शक	नामांकन संख्या .....
कार्यक्रम कोड	नाम .....
अध्ययन केंद्र का कोड	पता .....
(स्थान)	तिथि .....

नोट : उपर्युक्त फार्मेट का अनुसरण कड़ाई से करें।

4. आपकी उत्तर पृश्ठिका हर नज़रिए से पूरी होनी चाहिए। सुनिश्चित करें कि सत्रीय कार्य जमा कराने से पहले आपने सत्रीय कार्यों के सभी प्रश्नों के उत्तर दिए हैं। अधूरे उत्तर खराब अंक देंगे।
5. जहाँ तक संभव हो पाठ्यक्रम सामग्री के प्रासंगिक बिंदुओं का उल्लेख करें और पाठ्य सामग्री की ज्यों की त्यों नकल लिखने की बजाय अपने उत्तर अपने शब्दों में खोल कर लिखें।
6. सत्रीय कार्य करते समय अध्ययन सामग्री की नकल न मारें। देखा गया है कि सत्रीय कार्यों को पूरा करने के लिए अध्ययन सामग्री की नकल मारी जाती है और इसके लिए शून्य अंक मिलेगा।
7. अन्य शिक्षार्थियों की उत्तर पृश्ठिकाओं से नकल न मारें। यदि ऐसा पाया जाता है तो संबद्ध शिक्षार्थियों के सत्रीय कार्यों को खारिज़ कर दिया जाएगा।
8. अपने उत्तर फुलस्केप साइज़ पेपर पर ही लिखें। सामान्य लेखन पत्र, न अधिक मोटे या पतले, ही कारगर होंगे। सत्रीय कार्य अनिवार्यतया हस्तलिखित ही हों। टंकित सत्रीय कार्य स्वीकार्य नहीं होंगे।
9. प्रत्येक सत्रीय कार्य में बाये और 3 इंच का मार्जन और प्रत्येक उत्तर की समाप्ति के बाद 4 पंक्तियों का फासला देना जरूरी है। प्रत्येक उत्तर की प्रश्न संख्या साफ तरीके से लिखें। सत्रीय कार्य करते समय, कृपया निर्देशों को सावधानीपूर्वक पढ़ें।
10. आपके अध्ययन केंद्र/पीएससी के संयोजक आपके मूल्यांकित सत्रीय कार्य आपको लौटा देंगे। सत्रीय कार्यों में आपके निश्पादन पर मूल्यांकन की संपूर्ण टिप्पणियाँ वाली मूल्यांकन पृश्ठिका की प्रति भी सम्मिलित होगी। इससे आप भावी सत्रीय कार्यों एवं सत्रांत परीक्षाओं को अधिक बेहतर तरीके से करने के योग्य होंगे।
11. सत्रीय कार्य अपने अध्ययन केंद्र/पीएससी कार्यक्रम प्रभारी/संयोजक को भेजें।

सत्रीय कार्य करने से पहले निर्देशों को सावधानीपूर्वक पढ़ें।

कार्यक्रम की सफलता हेतु हमारी शुभकामनाएं!

सुखद अध्ययन! **कार्यक्रम संयोजक (सीआईएस)**

बीएलपी 001: रेशम उत्पादन का परिचय

कुल अंक: 50

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान है। (10x5=50)

1. रेशम उत्पादन के क्षेत्र में रोज़गार देने के व्यापक अवसर प्रदान करने की क्षमता है। अपने शब्दों में कथन की पुष्टि कीजिए।
2. रेशम उत्पादन उद्योग में सम्मिलित विभिन्न लाभार्थियों के बारे में लिखिए।
3. उपोत्पाद को परिभाषित कीजिए। रेशमकीट पालन संबंधी विभिन्न उपोत्पादों का संक्षेप में वर्णन कीजिए।
4. धागाकरण प्रक्रिया को क्रमप्रवाह आरेख की सहायता से व्याख्या कीजिए।
5. लिंग पृथक्करण का क्या महत्व है? यह कब किया जाना चाहिए? नर और मादा प्यूपा के अंतर को स्पष्ट कीजिए।
6. वर्मी कम्पोस्ट और गोबर खाद में अंतर स्पष्ट कीजिए।
7. रेशम उत्पादन में गुणवत्ता संकल्पना को परिभाषित कीजिए। अच्छे कोसाओ के संबंध में इसके पैरामीटरों को परिभाषित कीजिए।
8. रेशम उत्पादन में प्रशिक्षण प्रदान करने के संबंध में केंद्रीय रेशम बोर्ड और कृषि विश्वविद्यालयों की भूमिका की व्याख्या कीजिए। प्रशिक्षण के माध्यम से ग्रामीण युवा वर्ग को रोज़गार के अवसर कैसे प्राप्त होते हैं?
9. बीजागार क्या है? शहतूती अंडों से गैर–शहतूती अंडों का उत्पादन कैसे भिन्न है?
10. सिंचित दशाओं के अंतर्गत एक एकड़ के शहतूत बागान के लिए अनावर्ती एवं आवर्ती दोनों नज़रियों से उगाने संबंधी लागत एवं रखरखाव लागत का आकलन कीजिए।

बीएलपीआई 002: पोषक पौधे की कृषि

कुल अंक: 50

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान है। (10x5=50)

1. शहतूत की उत्कृष्ट वृद्धि के लिए उपयुक्त मृदा एवं जलवायु के बारे में चर्चा कीजिए।
2. निम्नलिखित को 2–3 पंक्तियों में परिभाषित कीजिए।
   क) जैव–उर्वरक
   ख) गुड़ाई
   ग) पलवार
   घ) कलम बाँधना
   च) गूंटी बाँधना

3. चाकी शहतूत उद्यान क्या है? रेशम उत्पादन उद्योग में इसके महत्व की व्याख्या कीजिए।

4. सिंचित एवं वर्षा आधारित अवस्थाओं में शहतूत उद्यान रख–रखाव हेतु संस्तुति रसायनिक उर्वरक की खुराक एवं उपयोग कार्यक्रम की प्रस्तुति कीजिए।

5. मृदा नमी संरक्षण क्या है? खासतौर पर वर्षा आधारित दशाओं के अंतर्गत इसके महत्व का वर्णन कीजिए।

6. उप–उष्णीय एवं शीतोष्ण कटिबंधीय क्षेत्रो के अंतर्गत कॉट–छाँट की विधियों का वर्णन कीजिए।

7. यांत्रिकरण क्या है? रेशम उत्पादन में इसकी आवश्यकता क्यों पड़ती है?

8. शहतूत उद्यान के लिए नर्सरी तैयार करने की प्रक्रिया का वर्णन कीजिए।

9. मूगा खाद्य पादपों के प्रवर्धन का वर्णन कीजिए।

10. गैर–शहतूत पौधशाला उगाने से पहले बीजों को पानी में भिगोना क्यों आवश्यक है? तसर खाद्य पादपों एवं इसके रख–रखाव के लिए पौधशाला उगाने और प्रतिरोपण विधि का वर्णन कीजिए।

बीएलपीआई 003: रेशमकीट पालन

कुल अंकः 50

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान है। (10x5=50)

1. विविध प्रकार के रेशमकीटों और इनके पोशक पौधे कौन से हैं?

2. ब्लैक बॉक्सिंग क्या है? यह क्यों की जाती है? ब्लैक बॉक्सिंग की विभिन्न विधियाँ कौन सी हैं?

3. रेशमकीट पालन गृह की स्वच्छता बनाए रखते समय किन बातों को ध्यान में रखना जरूरी है?

4. रेशमकीट पालन को प्रभावित करने वाले पर्यावरणीय कारकों का वर्णन कीजिए।

5. रेशमकीट पालन गृह के अभिविन्यास, इसकी दीवार और छत संबंधी संरचना का वर्णन, उचित कारण देते हुए कीजिए।

6. ''अच्छी फसल के लिए चाकी पालन महत्वपूर्ण है''। कथन की पुष्टि कीजिए।

7. मूगा रेशमकीटों के उत्तरावस्था पालन का वर्णन कीजिए।

8. कोसा निर्माण क्या है? यदि संभव हो तो कोसा बाज़ार में अपने निजी अनुभव के आधार पर उचित कोसा उत्पादन और विपणन दशाओं का उल्लेख कीजिए।

9. रेशमकीटों की कताई में प्रयुक्त विभिन्न प्रकार के माऊन्टेजों का वर्णन कीजिए।

10. कोसा छँटाई क्या है? यह क्यों किया जाता है? दोषपूर्ण कोसाओं की चर्चा कीजिए।

बोएलपी 004: फसल सुरक्षा

कुल अंक: 50

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान है। (10x5=50)

1. शहतूत में पत्ती किट्ट रोग होने के कारणात्मक कर्मक, इसकी उत्पत्ति, इस रोग के कारण फसल क्षति और इस रोग के लक्षणों का वर्णन कीजिए।

2. निम्नलिखित रोगों से ग्रस्त रेशमकीटों के खास लक्षणों का उल्लेख कीजिए और इनके निवारण एवं नियंत्रण के विविध उपायों को सूचीबद्ध कीजिए:

   क) ग्रेसरी

   ख) फ्लेचरी

   ग) मसकर्डाइन

   घ) पेब्रीन

3. शहतूत को विविध रोगों, पीड़कों और परभक्षियों से नियंत्रित करने के सांस्कृतिक, जैविक और रासायनिक उपायों के बीच क्या अंतर है?

4. फफूँदननाशकों के छिड़काव से पहले, इस दौरान और बाद में बरती जाने वाली मुख्य सावधानियाँ कौन सी हैं?

5. जैव सूत्रीकरण क्या है? मृदा अनुप्रयोग के लिए आप मिश्रण कैसे तैयार करते हैं?

6. रेशमकीट पालन के दौरान स्वच्छता संबंधी किन व्यवहारों का अनुसरण किया जाता है? सारबद्ध प्रस्तुति कीजिए। बताइए कि ये रोगों के नियंत्रण में योगदान कैसे देते हैं?

7. नर्सरी तैयार करने के दौरान शहतूत पर हमला बोलने वाले रोगों की इनके कारणात्मक कारकों एवं लक्षणों समेत संक्षेप में चर्चा कीजिए।

8. यूजी मक्खी प्रबंधन का वर्णन कीजिए।

9. रेशमकीट पालन के दौरान विसंक्रमण के लिए एक्टिविटी चार्ट बनाइए।

10. निम्नलिखित को 2–3 पंक्तियों में परिभाषित कीजिए:

    क) निम्फ

    ख) परभक्षी

    ग) फफूंदनाशी

    घ) परपोशी

    च) आईडीएम